2005

NA-BA/B.Com-I Hindi(Com)

Time-3 Hours. Full Marks-100

Answer all questions. सभी प्रश्नों के उत्तर दें।

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :- 15

(क) राजनीति का अपराधीकरण (ख) दूरदर्शन : वरदान या अभिशाप ?

(ग) यदि मैं देश का प्रधानमंत्री होता (घ) मिली जुली सरकार

(ङ) जरा बिहार के बाहर जाकर तो देखिए !

2. सूरदास के भाव सौंदर्य और कलात्मक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 15

अथवा

"वीरों का कैसा हो वसंत" शीर्षक कविता के केन्द्रीय भाव अथवा प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए।

3. ललित निबंध की दृष्टि से "अयोध्या उदास लगती है" की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

"नैराश्य" का सारांश प्रस्तुत करते हुए उसकी विशेषताएँ बताइए।

अथवा

एकांकी कला की दृष्टि से "रीढ़ की हड्डी" अथवा "सत कीतने तत्व" की समीक्षा कीजिए।

4. हिन्दी के विकास की विविध दिशाओं का वर्णन कीजिए। 15

अथवा

ब्रिटिश शासन काल में हिन्दी की स्थिति पर संक्षिप्त निबंध लिखिए।

5. बिहार के बाहर बिहारी छात्रों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार को विषय बनाते हुए किसी पत्र के सम्पादक के नाम पत्र लिखिए। 10

6. निम्नलिखित संदर्भ का संक्षेपण कीजिए :- 10

विज्ञान ने संसार को छोटा बना दिया है। किन्तु लन्दन और दिल्ली की पारस्परिक दूरी भले ही कम हुई हो, आदमी से आदमी की दूरी कम नहीं हुई है। रेडियो के प्रताप से हम लन्दन के घंटे की आवाज रोज ही सुनते हैं, किन्तु अपने पड़ोसी की कराह हमारे कानों में नहीं पड़ती है। धरती छोटी हो गयी, किन्तु सभ्यताओं की दूरी बनी हुई है। संसार के सामने यदि सबसे बड़ा लक्ष्य यह है कि हम सारी मानवता को एक करें तो इस युग का श्रेष्ठतम कर्त्तव्य भी यही हो सकता है कि देशों को नहीं, सभ्यताओं को भी एक दूसरे के समीप लायें। विचार धाराओं को एक दूसरे से परिचित करायें और मतवादों को आपस में दोस्त बना दें। किन्तु यह काम राजनीति के हवाले नहीं किया जा सकता। यह कार्य मुख्यतः उनका है, जो दार्शनिक

है, कवि है, संत, पैगम्बर, लेखक, वक्ता और कलाकार है। राजनीति के माध्यम से किये जाने पर यह काम और भी मुश्किल हो जाता है।

7. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर दिये गये प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्यों में दीजिए- 5

मुम्बई से राजधानी पहुँचे जैन संत पुष्पदंत सागर जी महाराज ने शुक्रवार को अपने प्रवचन में कहा कि प्रत्येक मानव के जीवन में सरलता बहुत जरूरी है। सरल जीवन से ही सभ्य समाज की रचना संभव है। सरल जीवन के लिए जरूरी है कि लोग सत्संग की शरण में जायें। उन्होंने कहा कि मानव को आकांक्षाएँ रखनी चाहिए, लेकिन उसे अहंकार नहीं बनने देना चाहिए। अहंकार हमेशा नाश की निशानी होता है। महाराज जी ने श्रद्धालुओं को शिक्षा दी कि वाणी पर सदैव संयम रखें। आवश्यकता अनुसार बोलना व्यक्ति के लिए अच्छा होता है। उन्होंने महाभारत का उदाहरण देते हुए कहा कि एक द्रौपदी ने कठोर वाणी का प्रयोग कर कौरवों और पाण्डवों के बीच महाभारत करा दिया, जिसमें भारी संख्या में लोग मारे गये। इस अवसर पर आज सुबह एक शोभा यात्रा जैन भवन, कांग्रेस मैदान से निकली जो शहर के विभिन्न मार्गों से गुजर कर एक सभा में परिणत हुई।

प्रश्न :- 1. सरल जीवन और सत्संग का उपदेश किसने दिया ?

2. वे कहाँ से आये थे ?

3. सत्संग की शरण में जाना क्यों आवश्यक है ?

4. वाणी पर संयम रखने की बात क्यों कही गयी ?

5. शोभायात्रा कहाँ से निकली थी ?

8. वाक्य प्रयोग द्वारा किन्हीं पाँच का अर्थ स्पष्ट कीजिए - 5

आम का आम गुठली का दाम, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता, दूध का दूध पानी का पानी, आँखें तरेरना, उँगली उठाना, कमर कसना, कान पर जूँ न रेंगना, कान में तेल डालना।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए 5X2=10

(क) कर्ता के "ने" चिह्न का प्रयोग कहाँ-कहाँ होता है? सोदाहरण बताइए।

(ख) व्यंजन और विसर्ग संधि से आप क्या समझते हैं? दोनों के दो-दो उदाहरण दीजिए।

(ग) क्रिया के भेदों का परिचय दीजिए।

(घ) वाक्य- प्रयोग द्वारा किन्हीं पाँच का लिंग-निर्णय कीजिए -

दूध, सदन, सभा, समाज, परिवार, शपथ, पानी, जी।